देवना सैथ

तमाम पुराने चाँद

"बत्ती अब नहीं जलेगी!" ध्रुव की माँ ने तल्खी से कहा। बत्ती गुल की और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

एकदम-से परछाइयाँ दीवार कूद सामने आईं। ध्रुव ने कम्बल को ज़ोर से भींच लिया। पर परछाइयाँ बढ़ती रहीं। कुछ झिझकीं फिर पीछे हट गईं। कमरे में अब भी कुछ रोशनी थी। खिड़की से चाँदनी घुसी आ रही थी। और जाली के परदों से छनकर फर्श और दीवार पर अपनी कलाकारी बिखेर रही थी। उसका प्रकाश दूसरी दीवारों पर भी पड़ रहा था। इससे कुछ देर पहले तक न दिखने वाली चीज़ें, अपनी परछाइयों को पीछे घसीटते हुए हट गई थीं।

ध्रुव ने उस कलाकृति को कुछ देर देखा। फिर खिड़की के बाहर की तेज़ रोशनी की ओर मुड़ गया। वहाँ उसका दोस्त चाँद चमक रहा था।

अब वह चैन से सो सकता था। पर नींद कहाँ आ रही थी उसे! वह खिड़की के पास गया और लेस वाले परदे हटा दिए। चाँद पहाड़ी के एक ओर टिका था – स्थिर और पीला। वह देर तक उसे देखता रहा, फिर खिड़की खोलकर बाहर निकल गया। एक पल रुक पीछे देखा। बाहर से कमरा अँधेरे में डूबा नज़र आ रहा था। ध्रुव पलटा और नीचे घास पर कूद गया।

घास ओस से नम थी। चाँदनी ने अजीब काम किए थे। मकान पुराना लगने लगा था, पर पेड़ नए और जवान।

वह घास पार कर गड्ढों और पेड़ों के नीचे पसरे परछाइयों के तालों से बचता-बचाता पहाड़ की ओर बढ़ चला। जितना ऊँचा वह चढ़ता, चाँद उतना ही बड़ा होता गया। वह जानता था कि चाँद आकाश में चिपका था और वह पहाड़ से उस तक पहुँच सकता था।

जब वह पहाड़ की चोटी तक पहुँचा तो लगा मानो चाँद दुनिया भर में फैल गया है। सब कुछ उसकी रोशनी में छुप गया है – पहाड़ और आसमान के अलावा। रोशनी कोमल थी। उसकी आँखों में चुभ नहीं रही थी। वह सीधे उसकी ओर देख सकता था, तब भी जब वह चाँद तक पहुँच गया था। ध्रुव ने उसकी सतह पर हाथ फेरा। सतह ठण्डी और सख्त लगी – आसमान की गोलाई पर सपाट दबी हुई।

"हलो," एक आवाज़ आई।

ध्रुव चौंका और पहाड़ पर लगभग जा गिरने को हुआ। पहाड़ के दूसरी ओर चोंगा पहने एक बूढ़ा नज़र आया। उसके पास एक बड़ा-सा बक्सा था। वह छोटा-सा बूढ़ा चाँद को आसमान पर चिपका रहा था। और हवा के बचे-खुचे बुलबुले हाथ फिरा-फिराकर निकाल रहा था। चाँद के नीचे कुछ लगाने के लिए बूढ़ा चींटी के आकार में सिकुड़ गया। फिर पलक झपकते ही इतना बड़ा हो गया कि आसमान छूने लगा। उसके ऊपर कुछ चिपकाना जो था। ध्रुव के आकार का बनकर उसने फिर से "हलो" कहा। उसकी आँखें गोल और पीली थीं, ठीक दो चाँदों की तरह।

"हलो," ध्रुव ने जवाब दिया। अमूमन अजनबियों से वह जितना शर्माता था, उतनी शर्म उसे नहीं आई। "आप कर क्या रहे हैं?"

"आकाश की सजावट," छोटे बूढ़े आदमी ने कहा। उसकी आँखें पूरे चाँद में छूट गए हवा के बुलबुलों को ढूँढ रही थीं। "काम काफी सफाई से किया गया है, है ना?" उसने पूछा।

ध्रुव ने हामी में सिर हिलाया। बूढ़ा अपने बक्से में कुछ खखोड़ता रहा था। भीतर से सफेद रोशनी आ रही थी। ध्रुव यह देखने के लिए कुछ पास सरक आया कि उसमें क्या धरा है। बक्से में पुराने चाँद रोटियों की थप्पियों की तरह एक के ऊपर एक रखे थे। कुछ तो वास्तव में छोटी रोटियों-से थे तो कुछ छकड़े जितने बड़े थे। पर एक भी चाँद उतना बड़ा न था जितना बड़ा इस समय आसमान पर चमक रहा था। "शायद ये पुराने पड़ने पर सिकुड़ जाते हों और उनकी चमक गायब हो जाती हो," ध्रुव ने सोचा।

छोटे बूढ़े ने एक चमकदार चाँद निकाला और उसे घास पर रख दिया। फिर अपने चोंगे से हथौड़ा निकाल एक ज़ोरदार वार से पुराने चाँद के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। सभी टुकड़े तारों के आकार के थे – कुछ बड़े, कुछ छोटे। फिर अपना आकार बढ़ाते हुए बूढ़े ने मुट्ठी भर सितारे आसमान में फेंके। और वे यहाँ-वहाँ जाकर चिपक गए। उसने आसमान को जाँचा और बोला, "हूँ...।" फिर आसमान के दूसरे हिस्से में भी कुछ सितारे छितरा दिए।

"लो हो गया!" बूढ़े ने तसल्ली से भरकर कहा और फिर से ध्रुव जितना हो गया। उसने बक्से को फिर से खंगाला। फीकी रोशनी वाले रोटी के आकार के एक चाँद को निकाल उसने उसे नाखुशी से देखा।

"इसकी रोशनी तो गई समझो। इससे काम नहीं चलने का। चच्च, चच्च! कुछ ही सालों में बुझ जाएगा।"

"पर इसमें अभी भी बढ़िया चमक है," ध्रुव बोला। वो अपने

सोने के अँधेरे कमरे और उसमें छुपी परछाइयों की बात सोच रहा था, जो फीकी रोशनी के खत्म होने के इन्तज़ार में रहती थीं। "हम्म...," छोटे बूढ़े ने कहा। "इससे काम तो चल ही नहीं सकता। पर अगर यह तुम्हारे किसी काम आए तो तुम इसे ले जा सकते हो।"

ध्रुव ने एक पुराना चाँद अपने हाथों में पाया। बूढ़ा अपना बक्सा बन्द कर उसे पीठ पर लाद रहा था। "गपशप के लिए रुक नहीं सकता। बचे हुए आसमान का काम बाकी है।"

उसके पाँव इतने लम्बे हो गए कि उसका सिर ऊपर आसमान तक उठ गया। ध्रुव ने "धन्यवाद" कहना चाहा पर वो तो नज़रों से ओझल हो चुका था।

रात ठण्डी थी। ध्रुव काँप उठा और बिस्तर की गरमाहट के बारे में सोचने लगा। चाँद को काँख में दबाए वह पहाड़ से नीचे उतरने लगा। गड्ढों की परछाइयों के पास पहुँचते ही वे उससे दूर भागने लगीं, सो वह जानबूझकर घने पेड़ों के नीचे पसरे अँधेरे की ओर चल पड़ा। पुराने चाँद की किरणें उसके सामने, उसके पीछे और अगल-बगल फैलने लगीं, जिससे परछाइयाँ पास नहीं फटक पाईं। पर जब वह वापस खुले मैदान में आया तो परछाइयाँ पहाड़ पर के पूरे चाँद की चमक में लगभग गायब हो गई थीं।

वह खिड़की के रास्ते अपने कमरे में चढ़ आया और पुराने चाँद ने उसके हर कोने को रोशन कर दिया था। उसे रखने की बस एक ही जगह थी। ध्रुव दराजों वाली अलमारी पर चढ़ा और पूरी तरह शरीर को तान पुराने चाँद को कमरे की छत पर दबाया। वह अच्छे से चिपक गया। जब वह बिस्तर में घुसा तो वह उनींदा तो था, सन्तुष्ट भी था। पुराना चाँद हमेशा वहाँ रहेगा, अँधेरे में रोशनी बिखेरता हुआ, पर दिन में अदृश्य। उसे आसानी से नींद आ गई। चकमक

देवना दसवीं में पढ़ रही हैं।